

[2023] 3 एस. सी. आर 184

/

[2023] 3 एस सी आर।

/

अश्विनी कुमार उपाध्याय बनाम.

भारत का संघ व अन्य ।

(2023 की लिखित याचिका (सिविल) No.190) 27 फरवरी, 2023

/

[के. एम. जोसेफ और बी. वी. नागरत्ना, जे. जे.]

भारत का संविधान-अनुच्छेद 32,14-गृह मंत्रालय को बर्बर विदेशी आक्रमणकारियों के नाम पर रखे गए प्राचीन ऐतिहासिक सांस्कृतिक धार्मिक स्थलों के मूल नामों का पता लगाने के लिए एक नाम परिवर्तन आयोग का गठन करने के लिए निर्देश देने की मांग करने वाली याचिका दायर की गई; एसआई को उनके प्रारंभिक नामों का शोध करने और प्रकाशित करने के लिए; केंद्र और राज्य सरकारों को अपनी वेबसाइटों और अभिलेख को अपडेट करने के लिए-

आयोजित:धर्मनिरपेक्षता को संविधान की मूल संरचना के एक पहलू के रूप में स्वीकार किया गया है-भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है जो संविधान में विचार किए गए सभी वर्गों के मौलिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है-भारत का शासन विधि के शासन, धर्मनिरपेक्षता, संवैधानिकता के अनुरूप होना चाहिए, जिसका अनुच्छेद 14 राज्य की कार्रवाई में समानता और निष्पक्षता दोनों की गारंटी के रूप में खड़ा है-इस न्यायालय द्वारा मांगी गई राहत जो सभी यू/अनुच्छेद 32 के मौलिक अधिकारों के संरक्षक के रूप में कार्य करती है।

/

/

/

रिट याचिका खारिज करते हुए न्यायालय ने

अभिनिर्धारित किया :**1.1** धर्मनिरपेक्षता को संविधान की मूल संरचना के एक पहलू के रूप में स्वीकार किया गया है। किसी देश का वर्तमान और भविष्य अतीत का कैदी नहीं रह सकता है। भारत के शासन को विधि के शासन, धर्मनिरपेक्षता, संवैधानिकता के अनुरूप होना चाहिए, जिसका अनुच्छेद 14 राज्य की कार्रवाई में समानता और निष्पक्षता दोनों की गारंटी के रूप में सामने आता है। संस्थापकों ने भारत को एक गणराज्य के रूप में माना, जिसे केवल एक

निर्वाचित राष्ट्रपति वाली निकाय राजनीति से नहीं जोड़ा जाना चाहिए, जो कि पारंपरिक समझ है।लेकिन इसमें लोकतंत्र होने के आधार पर सभी वर्गों के लोगों के अधिकार सुनिश्चित करना भी शामिल है।यह महत्वपूर्ण है कि देश को आगे बढ़ना चाहिए।उन उदात्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जो भाग **IV** में निहित हैं-जो निदेशक सिद्धांत हैं, लेकिन संविधान के भाग **III** में भी गारंटीकृत मौलिक अधिकारों को ध्यान में रखते हुए, जिन्हें राज्य के रथ के दो पहियों के रूप में वर्णित किया गया है, दोनों ए

/

/

/

184

185

अश्विनी कुमार उपाध्याय बनाम भारत और हमारा संघ।

जो अपरिहार्य हैं, राष्ट्र की सुचारु प्रगति के लिए ऐसे कार्य किए जाने चाहिए जो समाज के सभी वर्गों को एक साथ जोड़ सकें।[पैरा **5,9** और **10**] [**188-बी; 193-ए-सी**]

1.2 किसी भी राष्ट्र का इतिहास किसी राष्ट्र की आने वाली पीढ़ियों को इस हद तक परेशान नहीं कर सकता कि आने वाली पीढ़ियां अतीत की बंदी बन जाएं।भ्रातृत्व का स्वर्ण सिद्धांत जो फिर से प्रस्तावना में निहित है, सबसे बड़ा महत्व रखता है और सभी हितधारकों के लिए एक निरंतर अनुस्मारक के रूप में प्रस्तावना में अपना स्थान सही ढंग से पाता है कि केवल विभिन्न वर्गों के बीच सद्भाव बनाए रखने से राष्ट्र की भलाई के लिए राष्ट्रत्व बंधन वर्गों की एक सच्ची धारणा को आत्मसात किया जाएगा और अंत में, एक संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना होगी।विधि की अदालतें, वास्तव में 'राज्य' के हर हिस्से के रूप में, इस उदात्त अहसास से निर्देशित होनी चाहिए कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है जो संविधान में उल्लिखित सभी वर्गों के मौलिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है।जिन राहतों की मांग की गई है, उन्हें इस न्यायालय द्वारा भारत के संविधान के अनुच्छेद **32** के अंतर्गत सभी के मौलिक अधिकारों के संरक्षक के रूप में कार्य करते हुए और उन मूल्यों को ध्यान में रखते हुए नहीं दिया जाना चाहिए जिन्हें न्यायालय को अपने दिमाग में सबसे ऊपर रखना चाहिए-प्रस्तावना इस दिशा में स्पष्ट प्रकाश डालती है।[पारस **11,12**] [**193-डी-एफ**]

/

/

/

परम पूज्य केशवानंद भारती श्रीपदगलवरु बनाम केरल राज्य और एक अन्य **(1973) 4 एस. सी. सी. 225:[1973] 0** पूरक।एससीआर **1**; एस. आर. बोम्मई और अन्य बनाम संघ

/

भारत और अन्य (1994) 3 एस. सी. सी. 1:[1994] 2 एस. सी. आर. 644-अनुसरण किया गया।

कर्नाटक राज्य बनाम प्रवीण भाई थोगडिया (डॉ.)

/

(2004) 4 एससीसी 684:[2004] 3 एससीआर 652; एम. पी.

गोपालकृष्णन नायर बनाम केरल राज्य **(2005) 11** एससीसी

45 :[2005] 3 एस. सी. आर. 712-पर निर्भर।संदर्भित निर्णय

/

[1973] पूरक।एससीआर **1**

पीछा किया।

पैरा **5**

[1994] 2 एससीआर **644**

पीछा किया।

पैरा **5**

[2004] 3 एससीआर **652**

पर विश्वास किया

पैरा **6**

[2005] 3 एससीआर **712**

पर विश्वास किया

पैरा **7**

/

/

[2023] 3 एस सी आर।

/

सिविल मूल आधिकारिता :2023 की लिखित याचिका (सिविल) No.190।

(भारत के संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत) अश्विनी कुमार दुबे, अधिवक्ता।याचिकाकर्ता के लिए।अश्विनी कुमार उपाध्याय, व्यक्तिगत रूप से याचिकाकर्ता ने न्यायालय का निर्णय दिया

/

के. एम. जोसेफ, न्या .

1. याचिकाकर्ता द्वारा मांगी गई राहत इस प्रकार है:

/

“क) संप्रभुता बनाए रखने और संविधान के अनुच्छेद 21,25 और 29 के अंतर्गत गारंटीकृत 'गरिमा का अधिकार, धर्म का अधिकार और संस्कृति का अधिकार' प्राप्त करने के लिए गृह मंत्रालय को 'प्राचीन ऐतिहासिक सांस्कृतिक धार्मिक स्थलों' के मूल नामों का पता लगाने के लिए एक 'नाम परिवर्तन आयोग' का गठन करने का निर्देश देना।

/

ख) वैकल्पिक रूप से, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को संविधान के अनुच्छेद 19 के अंतर्गत गारंटीकृत 'जानने का अधिकार' प्राप्त करने के लिए प्राचीन ऐतिहासिक सांस्कृतिक धार्मिक स्थानों के प्रारंभिक नामों पर शोध करने और प्रकाशित करने का निर्देश दें, जिनका नाम बर्बर विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा बदल दिया गया था।

/

ग) केंद्र और राज्य सरकारों को अपनी वेबसाइटों और अभिलेख को अद्यतन करने और बर्बर विदेशी आक्रमणकारियों के नाम पर प्राचीन ऐतिहासिक सांस्कृतिक धार्मिक स्थलों के मूल नामों का उल्लेख करने का निर्देश देना। "

2. हमने याचिकाकर्ता श्री अश्विनी कुमार उपाध्याय को व्यक्तिगत रूप से पेश होते हुए सुना है।

/

3. संक्षेप में, याचिकाकर्ता का मामला इस प्रकार प्रतीत होता है:देश आजादी की 75 वीं वर्षगांठ मना रहा है, लेकिन 'क्रूर विदेशी आक्रमणकारियों', उनके सेवकों और परिवार के सदस्यों के नाम पर कई प्राचीन, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक स्थल हैं।उन्होंने कई उदाहरण दिए हैं।वह भारत के संविधान के अनुच्छेद 21 से बहने वाले गरिमा के अधिकार का आह्वान करते हैं।वह

आगे प्रस्तुत करता है कि संस्कृति का उसका मौलिक अधिकार है जो अनुच्छेद 19 और 29 में संरक्षित है। एक बार फिर, वह अनुच्छेद 25 को धर्म के अपने अधिकार के स्रोत के रूप में और अपने ए के संबंध में संदर्भित करता है।

/

/

187

अश्विनी कुमार उपाध्याय बनाम भारत और हमारा संघ। [के. एम. जोसेफ, जे.] ए.

जानने का मौलिक अधिकार, वह अनुच्छेद 19 (1) (ए) पर निर्भर करता है। उन्होंने 'क्रूर आक्रमणकारियों' के नामों के निरंतर उपयोग से समझौता किए जाने वाली 'संप्रभुता' की अवधारणा को भी सामने लाया है। 4. याचिकाकर्ता, वास्तव में, कानून के निम्नलिखित प्रश्नों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है:

/

“1. क्या बर्बर आक्रमणकारियों के नाम पर प्राचीन ऐतिहासिक सांस्कृतिक धार्मिक स्थलों के नाम जारी रखना संप्रभुता के खिलाफ है?

2. क्या केंद्र और राज्य संविधान के अनुच्छेद 21 के अंतर्गत गारंटीकृत गरिमा के अधिकार को सुरक्षित करने के लिए प्राचीन ऐतिहासिक सांस्कृतिक धार्मिक स्थानों के नामों को उनके मूल नामों में बहाल करने के लिए बाध्य हैं?

/

3. प्राचीन ऐतिहासिक सांस्कृतिक धार्मिक स्थलों के नामों की बहाली के लिए दावा किया गया राहत, जो विदेशी शासन के दौरान बदल दिए गए थे, क्या राष्ट्र की एकता और अखंडता से संबंधित है, जिसे भारत के संविधान की प्रस्तावना में हासिल करने का प्रशंसनीय उद्देश्य है?

/

4. क्या धर्म को मानने, पालन करने और प्रचार करने का अधिकार, धार्मिक स्थानों के नामों के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है और इसलिए विदेशी शासन के दौरान किए गए परिवर्तनों को बहाल किया जाना चाहिए ताकि नागरिक अनुच्छेद 25 की गारंटी वाले धर्म का स्वतंत्र रूप से प्रचार, अभ्यास और प्रचार कर सकें?

/

5. क्या रामायण और महाभारत काल के दौरान प्रचलित स्थानों के नाम विदेशी शासन के दौरान मनमाने ढंग से और अवैध रूप से बदले गए थे, ताकि भारत के संविधान के अनुच्छेद 29 के अंतर्गत गारंटीकृत प्राचीन संस्कृति के संरक्षण के अधिकार की रक्षा की जा सके?

/

6. क्या प्राचीन ऐतिहासिक सांस्कृतिक धार्मिक स्थलों के नामों की बहाली, अनुच्छेद 21 के अंतर्गत गारंटीकृत पहचान के अधिकार से जुड़ी है?

/

7. क्या अनुच्छेद 19 के अंतर्गत गारंटीकृत जानने के अधिकार में प्राचीन ऐतिहासिक सांस्कृतिक धार्मिक स्थानों के मूल नाम जानने का अधिकार शामिल है? "

5. हम देख सकते हैं कि हमें संविधान के अनुच्छेद 32 के अंतर्गत मामले से निपटने वाले न्यायालय के रूप में यह ध्यान रखना होगा कि

/

188

/

[2023] 3 एस सी आर।

न्यायालय को मौलिक अधिकारों को लागू करने का काम सौंपा गया है। भारत, जो प्रस्तावना के संदर्भ में 'भारत' है, एक धर्मनिरपेक्ष देश है। उनकी पवित्रता में

केशवानंद भारती श्रीपदगलवरु बनाम केरल राज्य और

अन्य 1, हम देखते हैं कि यह राय दी गई थी कि "भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है जिसमें कोई राज्य धर्म नहीं है" (पैरा 487 देखें)। संविधान का धर्मनिरपेक्ष और संघीय चरित्र "संवैधानिक संरचना के बुनियादी तत्वों" में से एक पाया गया है (पैरा 582 देखें)। में रिपोर्ट किए गए निर्णय में नौ विद्वान न्यायाधीशों की एक पीठ द्वारा धर्मनिरपेक्षता को स्वीकार किया गया है

/

एस. आर. बोम्मई और अन्य बनाम भारत संघ और अन्य 2

संविधान की मूल संरचना। इसमें, इस न्यायालय ने अन्य बातों के साथ घोषणा की:

/

“144.....ऐसी परिस्थितियों में, उक्त पार्टी द्वारा गठित मंत्रालयों पर धर्मनिरपेक्षता के उद्देश्य का पालन करने के लिए भरोसा नहीं किया जा सकता था जो संविधान की मूल संरचना और संविधान की आत्मा का भी हिस्सा था।

145. ये विवाद अनिवार्य रूप से हमें हमारे संविधान द्वारा स्वीकार की गई धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा पर चर्चा करने के लिए आमंत्रित करते हैं। हमारा संविधान किसी भी धर्म के पालन को निजी या सार्वजनिक रूप से प्रतिबंधित नहीं करता है। संविधान की प्रस्तावना के माध्यम से, इस देश के लोगों ने अन्य लोगों के साथ-साथ इस देश को एक धर्मनिरपेक्ष गणराज्य बनाने और इसके सभी नागरिकों के लिए न्याय, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक (i) विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, विश्वास और पूजा की स्वतंत्रता (iii) स्थिति और अवसर की समानता; और (iv) व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता को सुनिश्चित करने वाले सभी भाइयों को बढ़ावा देने का गंभीरता से संकल्प लिया है। संविधान का अनुच्छेद 25 सभी व्यक्तियों को समान रूप से विवेक की स्वतंत्रता और सार्वजनिक व्यवस्था, नैतिकता और स्वास्थ्य के अधीन और अन्य मौलिक अधिकारों के अधीन धर्म को स्वतंत्र रूप से मानने, पालन करने और प्रचार करने के अधिकार की गारंटी देता है और किसी भी आर्थिक, वित्तीय, राजनीतिक या अन्य धर्मनिरपेक्ष गतिविधि को विनियमित या प्रतिबंधित करने वाला कोई भी विधि बनाने की राज्य की शक्ति जो धार्मिक अभ्यास से जुड़ी हो सकती है। अनुच्छेद 26 प्रत्येक धार्मिक संप्रदाय या उसके किसी भी खंड को (ए) धार्मिक और धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए संस्थानों की स्थापना और रखरखाव, (बी) धर्म के मामलों में अपने मामलों का प्रबंधन करने, (सी) चल और अचल संपत्ति का स्वामित्व और अधिग्रहण करने के अधिकार की गारंटी देता है।

/

/

/

/

1 (1973) 4 एससीसी 225 2 (1994) 3 एससीसी 1 ए

/

189

अश्विनी कुमार उपाध्याय बनाम भारत और हमारा संघ। [के. एम. जोसेफ, जे.] ए.

और (घ) विधि के अनुसार ऐसी संपत्ति का प्रशासन करना। अनुच्छेद 29 नागरिकों के प्रत्येक वर्ग को अन्य लोगों के साथ अपनी विशिष्ट संस्कृति की गारंटी देता है। अनुच्छेद 30 में कहा गया है कि धर्म के आधार पर सभी अल्पसंख्यकों को अपनी पसंद के शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना और प्रशासन का अधिकार होगा। यह राज्य को धार्मिक अल्पसंख्यक द्वारा प्रबंधित शैक्षणिक

संस्थान को सहायता देने में कोई भेदभाव करने से रोकता है। अनुच्छेद 14, 15 और 16 अंतर्गत संविधान किसी भी नागरिक के खिलाफ उसके धर्म के आधार पर भेदभाव को प्रतिबंधित करता है और विधि के समान संरक्षण और सार्वजनिक रोजगार के समान अवसर की गारंटी देता है। अनुच्छेद 44 राज्य को अपने नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता सुनिश्चित करने का प्रयास करने का आदेश देता है। अनुच्छेद 51-ए भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है, जिसमें अन्य बातों के अलावा, (ए) संविधान का पालन करना और उसके आदर्शों और संस्थानों का सम्मान करना, (बी) भारत के सभी लोगों के बीच सद्भाव और सामान्य भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना, दूसरों के बीच, धार्मिक और विभागीय विविधताओं को पार करना, (सी) हमारी मिश्रित संस्कृति की समृद्ध विरासत को महत्व देना और संरक्षित करना, (डी) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवतावाद और जांच और सुधार की भावना विकसित करना; और (ई) सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना और हिंसा को त्यागना शामिल है।

/

/

/

148. हमारे संविधान के अंतर्गत धर्मनिरपेक्षता पर उपरोक्त चर्चा से एक बात जो प्रमुखता से सामने आती है, वह यह है कि धर्मों, धार्मिक संप्रदायों और संप्रदायों के प्रति राज्य का रवैया जो भी हो, धर्म को राज्य की किसी भी धर्मनिरपेक्ष गतिविधि के साथ नहीं मिलाया जा सकता है। वास्तव में, धर्मनिरपेक्ष गतिविधियों में धर्म का अतिक्रमण सख्ती से प्रतिबंधित है। यह संविधान के उन प्रावधानों से स्पष्ट है जिनका हमने ऊपर उल्लेख किया है। धर्म या धर्मों के प्रति राज्य की सहिष्णुता इसे धार्मिक या ईश्वरशासित राज्य नहीं बनाती है। जब राज्य नागरिकों को अपने धर्मों का पालन करने और उनका पालन करने की अनुमति देता है, तो यह या तो स्पष्ट रूप से या निहित रूप से उन्हें राज्य की गैर-धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष गतिविधियों में धर्म को शामिल करने की अनुमति नहीं देता है। धर्म की स्वतंत्रता और सहिष्णुता केवल आध्यात्मिक जीवन की खोज की अनुमति देने की सीमा तक है जो धर्मनिरपेक्ष जीवन से अलग है। उत्तरार्द्ध राज्य के मामलों के अनन्य क्षेत्र में आता है। यह लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 123 की उप-धारा (3) से भी स्पष्ट है, जो किसी उम्मीदवार या उसके एजेंट या उम्मीदवार या उसके चुनाव एजेंट की सहमति से किसी अन्य व्यक्ति द्वारा किसी व्यक्ति को उसके धर्म, नस्ल, जाति, समुदाय या भाषा के आधार पर वोट देने या उसे वोट देने से रोकने की अपील को प्रतिबंधित करती है।

/

/

/

/

/

[2023] 3 एस सी आर।

धार्मिक प्रतीकों के लिए अपील।उसी धारा की उप-धारा (3-ए) किसी उम्मीदवार या उसके एजेंट या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा उस उम्मीदवार के चुनाव की संभावनाओं को आगे बढ़ाने या किसी भी उम्मीदवार के चुनाव को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करने के लिए उम्मीदवार या उसके चुनाव एजेंट की सहमति से धर्म, नस्ल, जाति, समुदाय या भाषा के आधार पर भारत के नागरिकों के विभिन्न वर्गों के बीच शत्रुता और घृणा की भावनाओं को बढ़ावा देने या बढ़ावा देने के प्रयास को प्रतिबंधित करती है।उक्त उप-धारा (3) और (3-ए) के प्रावधानों का उल्लंघन उक्त धारा के अर्थ के भीतर भ्रष्ट प्रथाएं मानी जाती हैं।

/

197. कट्टरपंथ का उदय और राजनीति का सांप्रदायिकरण धर्मनिरपेक्षता विरोधी है।वे अलगाववादी और विभाजनकारी ताकतों को प्रोत्साहित करते हैं और राष्ट्रीय विघटन के लिए प्रजनन स्थल बन जाते हैं और संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली और संविधान को विफल कर देते हैं।न्यायिक प्रक्रिया को अपने निशुल्क और निष्पक्ष मताधिकार का प्रयोग करने के लिए किसी भी भ्रष्ट प्रथा से प्रभावित हुए बिना चुनावी प्रक्रिया में नागरिकों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देना चाहिए।उचित परिप्रेक्ष्य में सही व्याख्या लोकतंत्र की रक्षा में होगी और संभावित टकराव के बावजूद भी लोकतांत्रिक प्रक्रिया को समान रूप से बनाए रखने के लिए, यह न्यायालय का कर्तव्य है कि वह राजनीतिक दलों को जवाबदेही के लिए संवैधानिक मानकों के दायरे में लाने और संविधान, उनके सख्त पालन के लिए कानूनों का पालन करने के लिए संविधान की व्याख्या करे।

/

/

/

304.....सामाजिक न्याय, आस्था, आस्था या पूजा की स्वतंत्रता और स्थिति और अवसर की समानता के संवैधानिक वादे कैसे प्राप्त किए जा सकते हैं जब तक कि राज्य किसी व्यक्ति के धर्म, आस्था या विश्वास को उसके, उसके अधिकारों, उसके कर्तव्यों और उसके अधिकारों से निपटने के दौरान उसके विचार से पूरी तरह से अलग नहीं करता है?इस प्रकार धर्मनिरपेक्षता है

/

धार्मिक सहिष्णुता के एक निष्क्रिय दृष्टिकोण से अधिक। यह सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार की एक सकारात्मक अवधारणा है। यह रवैया

इसे कुछ लोग धर्म के प्रति तटस्थता या परोपकारी तटस्थता के रूप में वर्णित करते हैं। यह पश्चिमी उदार विचार द्वारा विकसित एक अवधारणा हो सकती है या जैसा कि कुछ लोग कहते हैं, यह हर समय भारतीय लोगों के साथ एक स्थायी विश्वास हो सकता है। वह भौतिक नहीं है। सार यह है कि यह एक संवैधानिक लक्ष्य है और संविधान की एक बुनियादी विशेषता है जैसा कि केशवानंद में पुष्टि की गई है।

/

भारती [केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य, (1973) 4 एस. सी. सी.

225 :1973 एस. सी. आर. 1] और इंदिरा एन. गांधी बनाम राज ए

/

191

अश्विनी कुमार उपाध्याय बनाम भारत और हमारा संघ। [के. एम. जोसेफ, जे.] ए.

नारायण [1975 सप एस. सी. सी. 1:(1976) 2 एस. सी. आर. 347] इस संवैधानिक नीति के साथ असंगत कोई भी कदम, सीधे शब्दों में, असंवैधानिक है।

(बल दिया गया)

6. कर्नाटक राज्य बनाम प्रवीण भाई थोगडिया (डॉ.), 3,

/

इस न्यायालय ने घोषणा की: "9. हमारा देश एक समृद्ध विरासत के साथ दुनिया का सबसे विविध समाज है और हमारा संविधान समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्र की अखंडता के उच्च विचारों के लिए प्रतिबद्ध है। जैसा कि सर्वविदित है, इस उपमहाद्वीप में कई जातियां एकजुट हुईं और उन्होंने अपनी संस्कृतियों, भाषाओं, धर्मों और रीति-रिवाजों को अपने साथ रखा है जो जीवन के महान और आदर्श तरीके - "विविधता में एकता" को सकारात्मक मान्यता प्रदान करते हैं। हालाँकि इन विविधताओं ने शुरुआती दिनों में समस्याएं पैदा कीं, लेकिन उन्हें ज्यादातर मानवीय दृष्टिकोण और मतभेदों के सामंजस्यपूर्ण सुलह के आधार पर उपयोगी और शांतिपूर्ण तरीके से हल किया गया। इस तरह से धर्मनिरपेक्षता को मौलिक विधि के एक हिस्से के रूप में और देश की राजनीतिक प्रणाली की मूल संरचना के एक अविभाज्य खंड के रूप में माना जाने लगा है। जैसा कि एस. आर. बोम्मई बनाम भारत संघ [(1994) 3 एस. सी. सी. 1] में उल्लेख किया गया है कि भारत के सभी व्यक्तियों को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की गई है। इसलिए, राज्य के दृष्टिकोण से, किसी विशेष व्यक्ति के धर्म, आस्था या विश्वास का कोई स्थान नहीं है और

व्यक्तिगत नागरिक पर थोपे जाने की कोई गुंजाइश नहीं है। दुर्भाग्य से, हाल ही में, एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करने वाले सभी प्रकार के धार्मिक कट्टरपंथ को बढ़ावा देने वाले निहित स्वार्थ, राज्य की संवैधानिक मशीनरी को धार्मिक प्राथमिकताओं के कुछ विचित्र विचारों के साथ बहुत तनाव और तनाव के अधीन करने का प्रयास कर रहे हैं, ताकि अपने स्वयं के स्वार्थी उद्देश्यों को बढ़ावा दिया जा सके, जो अंततः बहुत कठिनाइयों के साथ हासिल की गई राष्ट्रीय एकता को ला सकता है और यहां तक कि कमजोर कर सकता है। धर्म को राज्य की धर्मनिरपेक्ष गतिविधियों के साथ नहीं मिलाया जा सकता है और किसी भी प्रकार के कट्टरवाद को समाज के व्यापक हित और कल्याणकारी राज्य की बुनियादी आवश्यकता के नुकसान के लिए राजनीतिक दर्शन के रूप में पेश करने की अनुमति नहीं दी जा सकती है। आध्यात्मिक मूल्यों के बिना धर्म खतरनाक भी हो सकता है और चारों ओर अराजकता और अराजकता ला सकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि यदि कोई व्यक्ति

/

/

/

/

/

3 (2004) 4 एस. सी. सी. 684

/

192

/

[2023] 3 एस सी आर।

या व्यक्तियों का समूह, अपनी कार्रवाई या कठोर और भड़काऊ भाषण से आपसी घृणा के बीज बोने पर तुले हुए हैं, और उनकी प्रस्तावित गतिविधियों से वैमनस्य पैदा होने और संतुलन बिगड़ने की संभावना है, सार्वजनिक शांति और शांति का त्याग, कड़ी कार्रवाई, और इससे भी अधिक निवारक कार्रवाई अनिवार्य रूप से और महत्वपूर्ण रूप से की जानी चाहिए। कोई भी भाषण या कार्रवाई जिसके परिणामस्वरूप सांप्रदायिक सद्भाव का बहिष्कार होगा, उन सभी उच्च मूल्यों को नष्ट कर देगा जिनका संविधान का उद्देश्य है। लोगों का कल्याण सभी कानूनों और राज्य की कार्रवाई और सबसे बढ़कर संविधान का अंतिम लक्ष्य है। उनका एक साझा उद्देश्य है, वह है समग्र रूप से समाज की भलाई और व्यापक हित को बढ़ावा देना, न कि किसी व्यक्ति या किसी ब्रांड नाम वाले विशेष समूह का। यह अकल्पनीय है कि सांप्रदायिक सद्भाव, एक-दूसरे के लिए प्रेम और किसी के लिए घृणा के बिना सामाजिक कल्याण हो सकता है। आध्यात्मिक मूल्यों

पर आधारित धर्म का मूल, जिसे वेदों, उपनिषदों और पुराणों में मानव जाति के सामने प्रकट करने के लिए कहा गया था, ऐसा प्रतीत होता है: "दूसरों से प्यार करें, दूसरों की सेवा करें, हमेशा मदद करें, कभी चोट न पहुंचाएं "और" सर्व जन सुखिनो भवन्तो "। धर्म के नाम पर एक-श्रेष्ठता, चाहे वह कोई भी हो या किसी के भी संदर्भ में हो, संवैधानिक मंसूबों को अमान्य और अराजकता में बदल देगा, और पूरे समाज और मानवता पर इसके भारी प्रभाव का दावा करना, अपरिहार्य बुरे परिणाम हो सकते हैं, जिसके। "

/

/

/

/

(जोर दिया गया)

7. एम. पी. गोपालकृष्णन नायर बनाम केरल राज्य 4 वाले मामले में, यह न्यायालय घोषित किया:

"20. यह अब अच्छी तरह से व्यवस्थित है:

(i) संविधान धर्मशासित राज्य की स्थापना को प्रतिबंधित करता है।

/

((ii) राज्य को न केवल अपने किसी भी धर्म की स्थापना करने के लिए प्रतिबंधित किया गया है, बल्कि किसी विशेष धर्म के साथ अपनी पहचान बनाने या उसका समर्थन करने के लिए भी प्रतिबंधित किया गया है।

(3. भारतीय संविधान के अंतर्गत धर्मनिरपेक्षता का अर्थ नास्तिक समाज का संविधान नहीं है, बल्कि इसका अर्थ केवल सभी धर्मों को समान दर्जा देना है, जिसमें किसी के पक्ष में कोई वरीयता या भेदभाव नहीं है। "

/

8. हमारा विचार है कि याचिकाकर्ता द्वारा उठाए गए विधि के सवाल नहीं उठते हैं।

/

4 (2005) 11 एससीसी 45 ए

9. किसी देश का वर्तमान और भविष्य अतीत का कैदी नहीं रह सकता है। भारत के शासन को विधि के शासन, धर्मनिरपेक्षता, संवैधानिकता के अनुरूप होना चाहिए, जिसका अनुच्छेद 14 राज्य की कार्यवाही में समानता और निष्पक्षता दोनों की गारंटी के रूप में सामने आता है।

10. संस्थापकों ने भारत को एक ऐसा गणराज्य माना जो केवल एक निर्वाचित राष्ट्रपति वाली निकाय राजनीति से जुड़ा हुआ नहीं है जो पारंपरिक समझ है। लेकिन इसमें लोकतंत्र होने के आधार पर सभी वर्गों के लोगों के अधिकार सुनिश्चित करना भी शामिल है। यह महत्वपूर्ण है कि देश को आगे बढ़ना चाहिए। उन उदात्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जो भाग IV में निहित हैं—जो निदेशक सिद्धांत हैं, लेकिन संविधान के भाग III में गारंटीकृत मौलिक अधिकारों को भी ध्यान में रखते हुए, जिन्हें राज्य के रथ के दो पहियों के रूप में वर्णित किया गया है, जो दोनों राष्ट्र की सुचारु प्रगति के लिए अपरिहार्य हैं, ऐसे कार्य किए जाने चाहिए जो समाज के सभी वर्गों को एक साथ जोड़ते हैं।

/

/

11. किसी भी राष्ट्र का इतिहास किसी राष्ट्र की आने वाली पीढ़ियों को इस हद तक परेशान नहीं कर सकता कि आने वाली पीढ़ियां अतीत की बंदी बन जाएं। भ्रातृत्व का स्वर्ण सिद्धांत जो फिर से प्रस्तावना में निहित है, सबसे बड़ा महत्व रखता है और सभी हितधारकों के लिए एक निरंतर अनुस्मारक के रूप में प्रस्तावना में अपना स्थान सही ढंग से पाता है कि केवल विभिन्न वर्गों के बीच सद्भाव बनाए रखने से राष्ट्र की भलाई के लिए राष्ट्रत्व बंधन वर्गों की एक सच्ची धारणा को आत्मसात किया जाएगा और अंत में, एक संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना की जाएगी। हमें लगातार खुद को याद दिलाना चाहिए कि विधि की अदालतें, वास्तव में 'राज्य' के हर हिस्से के रूप में, इस उदात्त अहसास से निर्देशित होनी चाहिए कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है जो संविधान में उल्लिखित सभी वर्गों के मौलिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है।

/

/

/

12. इसलिए हमारा विचार है कि जिन राहतों की मांग की गई है, उन्हें इस न्यायालय द्वारा भारत के संविधान के अनुच्छेद 32 के अंतर्गत सभी के मौलिक अधिकारों के संरक्षक के रूप में कार्य करते हुए और उन मूल्यों को ध्यान में रखते हुए नहीं दिया जाना चाहिए जिन्हें न्यायालय को अपने दिमाग में सर्वोच्च रखना चाहिए—प्रस्तावना हमें इस दिशा में स्पष्ट प्रकाश देती है।

13. रिट याचिका खारिज कर दी जाती है।

/

दिव्या पांडे

लिखित याचिका खारिज कर दी गई।

(सहायक: रूपांशी विरंग, एलसीआरए)

/